भगवान सभी को अपना दिव्य असीम सुख क्यों नहीं दे रहे हैं?

हिंदू दर्शन जवाब देता है - किसी भी मायिक व्यक्ति का मन परिमित क्षेत्र में है एवं अशुद्ध है। सुख और दुःख मात्रा सहन करने के मामले में उसकी सीमाएं हैं। मन को इस सीमा से अधिक सुख या दुःख मिलने पर कोई भी जीवित नही रह सकता । यदि अनंत ईश्वरीय दिव्यानंद अशुद्ध मन में डाल दिया जाय तो उस आनंद की गर्मी के तापमान के कारण उस व्यक्ति की हड्डी फसली भी नही मिलेगी। हमे मन को शुद्ध करना पडेगा। भगवान का स्मरण वास्तव में यह कार्य करता है। ईश्वर शुद्ध व्यक्तित्व है, जो मन की अशुद्धता को धोता है। शुद्ध मन को तब दिव्य मन में परिवर्तित किया जा सकता है। दिव्य मन ही अनंत सुख को सहन करने में सक्षम होता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

स्थायी सुख, स्थायी जीवन, पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र तरीका ईश्वर को जानना है और कोई वैकल्पिक रास्ता नहीं है।

अगला सवाल "मन में अशुद्धता क्या है?"

अशुद्धता हमेशा किसी भी चीज की विषय वस्तु में होती है। मन की सामग्री, जो विचार, इच्छाएं, आसक्तियां आदि हैं, अशुद्ध हैं। अशुद्ध मन का दिव्य मन में परिवर्तन नही किया जा सकता। इसलिए मन को इस दुनिया के अशुद्ध विचारों से मुक्त करने की आवश्यकता है। ये विचार इस दुनिया की वस्तुओं और व्यक्तित्वों के बारे में हैं - पसंद और नापसंद, प्यार और घृणा,दोस्ती

और दुश्मनी, पांच इंद्रियों की पांच विषयों से उत्पन्न होने वाली कामनाएँ इत्यादि । आंख का विषय है देखना, कान का सुनना, जीभ का रस स्वाद लेना, नाक का गंध लेना, त्वचा का स्पर्श करना।

इन कामनायुक्त विचारों को दूर करना संभव नहीं है क्योंकि इनसे सुख और दु:ख की भावनाएँ जुडी है। लेकिन जब तक मन को इन अशुद्ध विचारों से मुक्त नहीं किया जाता, तब तक मन शुद्ध नहीं बन सकता। प्राकृत मन को दिव्य करने के लिए शुद्ध मन एक बुनियादी आवश्यकता है। मन को शुद्ध करने का तरीका है मन को ईश्वर के शुद्ध विचारों से भरना जो स्वयं ही अशुद्ध विचारों को बाहर निकाल देगा।

इस प्रकार हृदय की शुद्धि में ईश्वर के नाम, रुप, लीला आदि का स्मरण प्रमुख महत्व रखता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132